3 विजयनगर साम्राज्य

- मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में हुए विद्रोहों के फलस्वरूप अनेक क्षेत्रीय राजवंशों का उदय हआ। दक्षिण में विजयनगर और बहमनी राज्य की स्थापना भी मुहम्मद बिन तुगलक के समय में ही हुई थी। जिस समय उत्तर भारत में विघटनकारी शक्तियाँ प्रबल होकर अव्यवस्था फैला रही थीं, ठीक उसी समय दक्षिण भारत में विजयनगर एवं बहमनी राज्यों के शासकों द्वारा स्थायित्व तथा प्रजा के कल्याण के लिये अनेक सामाजिक–सांस्कृतिक उपाय किये गए।
- 14 वीं शताब्दी में उत्पन्न विजयनगर साम्राज्य को मध्ययुग और आधुनिक औपनिवेशिक काल के बीच का संक्रांति–काल एवं मध्ययुग का प्रथम हिन्दू साम्राज्य कहा जाता है। विजयनगर राज्य की स्थापना हरिहर और बुक्का नाम के दो भाइयों के द्वारा 1336 ई. में की गई थी।
- हरिहर और बुक्का वारंगल के काकतीय शासक प्रताप रुद्रदेव के पारिवारिक संबंधी या सामंत थे। तुगलकों ने वारंगल पर आक्रमण कर राज्य को नष्ट कर दिया तब दोनों भाई (हरिहर और बुक्का) कांपिली अथवा अनेगोंडी (वर्तमान कर्नाटक) राज्य में जाकर रहने लगे। एक विद्रोही को शरण देने के कारण कांपिली पर मुहम्मद तुगलक ने आक्रमण कर दिया तथा विजयोपरांत हरिहर और बुक्का को बंदी बना लिया गया।
- दोनों भाइयों को इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिये विवश किया गया, उसके उपरांत इन्हें विद्रोहियों के दमन के लिये दक्षिण भारत भेजा गया। दोनों भाइयों ने शृंगेरी के प्रतिष्ठित **गुरु माधव विद्यारण्य** तथा वेदों के प्रसिद्ध **भाष्यकार सायण** की प्रेरणा से इस्लाम धर्म को त्यागकर पुनः हिंदू धर्म स्वीकार किया। दक्षिण भारत में प्रारंभ हुई तुर्क सत्ता की विरोधी गतिविधियों में योगदान दिया तथा तुंगभद्रा नदी के किनारे सामरिक रूप से महत्त्वपूर्ण स्थान को विजयनगर के नाम से बसाया।
- हरिहर और बुक्का द्वारा स्थापित वंश को उनके पिता संगम के नाम पर संगम वंश कहा गया। 1336 ई. में हरिहर, विजयनगर का शासक बना। विजयनगर साम्राज्य की राजधानियां क्रमशः अनेगोण्डी, विजयनगर, पेनुगोण्डा तथा चन्द्रगिरि थी। हम्पी (हस्तिनावती) विजयनगर की पुरानी राजधानी का प्रतिनिधित्व करता है। विजयनगर का वर्तमान नाम हम्पी (हस्तिनावती) है।

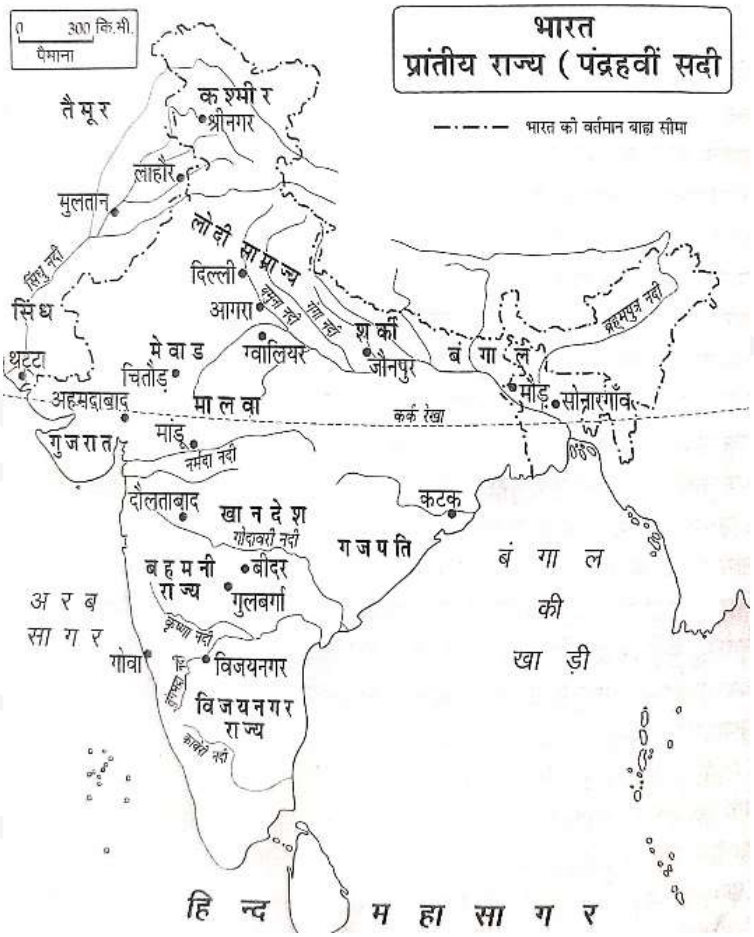

- विजयनगर के विषय में फारसी यात्री अब्दुल रज्जाक ने लिखा है कि ''विजयनगर दुनिया के सबसे भव्य शहरों में से एक लगा, जो उसने देखे या सुने थे।''

विजयनगर साम्राज्य के प्रमुख राजवंश			
राजवंश	**संस्थापक**	**शासनकाल**	**अन्तिम शासक**
संगम वंश	हरिहर एवं बुक्का	1336-1485 ई.	विरूपाक्ष द्वितीय
सालुव वंश	नरसिंह सालुव	1485-1505 ई.	इम्मादि नरसिंह
तुलुव वंश	वीर नरसिंह	1505-1570 ई.	सदाशिव राय
अरविडु वंश	तिरूमल	1570-1652 ई.	श्रीरंग तृतीय

संगम राजवंश (1336-1485 ई.)

संगम वंश	
शासक	**शासन काल**
हरिहर प्रथम	1336-1356 ई.
बुक्का प्रथम	1356-1377 ई.
हरिहर द्वितीय	1377-1406 ई.
बुक्का द्वितीय	1406 ई.
देवराय प्रथम	1406-1422 ई.
देवराय द्वितीय	1422-1446 ई.
मल्लिकार्जुन	1446-1465 ई.
विरूपाक्ष द्वितीय	1465-1485 ई.

➢ हरिहर प्रथम (1336-1356 ई.) :–

- विजयनगर साम्राज्य के संस्थापकों में से एक हरिहर प्रथम 1336 ई. में शासक बना। इसने प्रारंभ में अनेगोंडी को अपनी राजधानी बनाया परंतु बाद में साम्राज्य की राजधानी विजयनगर स्थानांतरित कर दी। हरिहर प्रथम को ''दो समुद्रों का अधिपति'' कहा जाता है।
- इसने बादामी, उदयगिरि एवं गूटी में स्थित दुर्गों को शक्तिशाली बनाया। इसने 1346 ई. में होयसल साम्राज्य को जीतकर उसे विजयनगर में शामिल कर लिया तथा 1352-53 ई. में कदम्ब एवं मदुरा पर विजय प्राप्त की। 1356 ई. में हरिहर की मृत्यु हो गई।

➢ बुक्का प्रथम (1356-1377 ई.) :–

- हरिहर प्रथम की मृत्यु के बाद उसका भाई बुक्का प्रथम विजयनगर का शासक बना। यद्यपि वह हरिहर प्रथम के साथ 1336 से ही संयुक्त शासक के रूप में शासन कर रहा था। हरिहर एवं बुक्का ने राजा व महाराजा की उपाधि ग्रहण नहीं की थी।
- बुक्का प्रथम को ''तीन समुद्रों का अधिपति'' कहा जाता है। बुक्का प्रथम ने हिंदू धर्म की सुरक्षा का दावा किया और ''वेदमार्ग प्रतिष्ठापक'' की उपाधि धारण की। वेद और अन्य नवीन ग्रंथों पर टीकाएँ लिखवाई तथा तेलुगु साहित्य को प्रोत्साहन दिया।
- इसके समय ही विजयनगर एवं बहमनी के मध्य संघर्ष की शुरुआत हुई। इसने बहमनी सुल्तान मुहम्मदशाह प्रथम से युद्ध और समझौता किया। विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य के बीच संघर्ष का मुख्य कारण कृष्णा–तुंगभद्रा नदियों के दोआब (रायचूर) का क्षेत्र था, उपजाऊ क्षेत्र होने के कारण दोनों साम्राज्य इसे अपने क्षेत्र में शामिल करना चाहते थे।
- 1377 ई. में मदुरै के अस्तित्व को समाप्त किया तथा तमिल व चेर के प्रदेश भी विजयनगर साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया।
- 1374 ई. में इसने एक दूतमंडल चीन भेजा तथा उसके साथ मित्रता के संबंध बनाए। 1377 ई. में इसकी मृत्यु हो गई।

➢ हरिहर द्वितीय (1377-1406 ई.) :–

- 1377 ई. में हरिहर द्वितीय विजयनगर राजसिंहासन पर महाराजाधिराज की उपाधि ग्रहण कर बैठा।
- हरिहर द्वितीय ने कनारा, मैसूर, त्रिचनापल्ली, कांची आदि प्रदेशों पर विजय प्राप्त की तथा श्रीलंका तक विजय हासिल कर उससे कर वसूली की।
- रायचूर दोआब के लिए इसका भी संघर्ष बहमनी शासक फिरोजशाह से हुआ। यद्यपि पहली बार वह पराजित हुआ परंतु उसने बहमनियों से गोवा और बेलगाँव को जीत लिया। यह विजय उसकी सबसे बड़ी सफलता थी क्योंकि गोवा उस समय का सबसे बड़ा एवं प्रसिद्ध बंदरगाह था, जिससे विदेशी व्यापार होता था तथा अच्छी नस्ल के घोड़े आयात किये जाते थे।
- हरिहर शिव के विरुपाक्ष रूप का उपासक था, किन्तु अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णु था। हरिहर द्वितीय अपनी विद्वता एवं विद्वानों को संरक्षण देने के कारण ''राज व्यास या राज वाल्मीकि'' कहलाया। 1406 ई. में इसकी मृत्यु हो गई।

➢ देवराय प्रथम (1406-1422 ई.) :–

- हरिहर द्वितीय की मृत्यु के उपरांत बुक्का द्वितीय शासक बना परंतु बहुत जल्द उसकी मृत्यु हो गई। उसके उपरांत देवराय प्रथम विजयनगर साम्राज्य का शासक बना।
- देवराय प्रथम के शासक बनते ही बहमनी राज्य से दोआब में अधिकार को लेकर युद्ध छिड़ गया जिसमें बहमनी सुल्तान फिरोजशाह बहमनी ने देवराय को पराजित कर दिया। युद्ध में पराजित होने के बाद इसे मोतियों और हाथियों के रूप में दस लाख का हर्जाना देना पड़ा तथा अपनी पुत्री का विवाह फिरोजशाह बहमनी से करना पड़ा और दोआब स्थित बाँकापुर का क्षेत्र दहेज़ के रूप में देना पड़ा।
- देवराय प्रथम ने कई जन–कल्याणकारी योजनाएँ प्रारंभ की। 1410 ई. में इसने तुंगभद्रा पर बाँध बनवाकर उससे नहर निकलवाई, इससे राजधानी में जल की समस्या समाप्त हो गई।
- इसके शासनकाल में इटली के यात्री निकोलोकोण्टी ने 1420 ई. में विजयनगर की यात्रा की। इसके दरबार को हरविलासम् के लेखक तथा प्रसिद्ध तेलुगु कवि श्रीनाथ सुशोभित करते थे। यह विद्वानों का महान संरक्षक था तथा राजप्रासाद के मुक्ता सभागार में उन्हें सम्मानित किया करता था। इसके समय विजयनगर दक्षिण भारत में विद्या का प्रसिद्ध केंद्र बन गया था ।

➢ देवराय द्वितीय (1422-1446 ई.) :–

- देवराय प्रथम के बाद उसका पुत्र रामचन्द्र 1422 ई. में सिंहासन पर बैठा, परन्तु कुछ महीने बाद ही उसकी मृत्यु गई। रामचन्द्र के बाद उसका भाई वीर विजय गद्दी पर बैठा, उसका भी शासन काल अल्पकालीन रहा। अगला शासक वीर विजय का पुत्र देवराय द्वितीय हुआ।
- यह संगम वंश का सबसे महान शासक था। इसके अभिलेख संपूर्ण विजयनगर साम्राज्य में पाए गए हैं। इसे ''गजबेटकर'' (हाथियों का शिकारी), ''प्रौढ़ देवराय'' तथा ''इम्माडि देवराय'' जैसी उपाधियों से सम्मानित किया गया। पौराणिक आख्यानों में इसे इन्द्र का अवतार बताया गया है।
- इसने सैन्य व्यवस्था में भी विशेष सुधार किये, अपनी सेना में कुछ तुर्क धनुर्धारियों को भर्ती किया। फरिश्ता के अनुसार 'इसने करीब दो हजार मुसलमानों को अपनी सेना में भर्ती किया एवं उन्हें जागीरें प्रदान की।' बहमनी साम्राज्य से तीन युद्ध किये और श्रीलंका तक विजय हासिल की। उसने आंध्र एवं उड़ीसा के गजपति शासक को पराजित किया। इसने कृष्णा नदी तक विजयनगर की उत्तरी एवं पूर्वी सीमा को बढ़ाया।
- वाणिज्य को नियंत्रित एवं नियमित करने के लिए उसने लक्कन्ना या लक्ष्मण, जो उसका दाहिना हाथ था, को 'दक्षिण समुद्र का स्वामी' बना दिया अर्थात् विदेश व्यापार का भार सौंप दिया।
- यह साहित्य का महान संरक्षक था तथा इसने स्वयं संस्कृत ग्रंथों महानाटक सुधानिधि एवं बादरायण के ब्रह्मसूत्र पर टीका की रचना की थी। उसके दरबार में तेलुगू कवि श्रीनाथ कुछ समय तक रहा। इसके समय फारसी (ईरानी) राजदूत अब्दुर्रज़्ज़ाक ने विजयनगर की यात्रा की थी।
- इसने मुसलमानों को मस्जिद निर्माण की स्वतन्त्रता दी थी व अपने सिंहासनारोहण के समय कुरान रखा था। 1446 ई. में इसकी मृत्यु हो गई।

➢ मल्लिकार्जुन (1446-1465 ई.) :–

- देवराय द्वितीय के बाद मल्लिकार्जुन संगम वंश का शासक बना। मल्लिकार्जुन को भी ''प्रौढ़ देवराय'' कहा जाता था।
- इसी के शासनकाल में चीनी यात्री माहुआन ने विजयनगर की यात्रा की थी।
- उसके समय में हुए उड़ीसा एवं बहमनी के आक्रमण में उड़ीसा ने कोंडबिदु एवं उदयगिरि के किले पर अधिकार कर लिया। प्रौढ़ देवराय के समय में उड़ीसा के गजपति शासकों की सेनाएं सम्भवतः रामेश्वर तक पहुंच गई थी। उड़ीसा के गजपति शासकों द्वारा बुरी तरह परास्त होने पर हुए अपमान को न सह पाने के कारण 1465 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

➢ विरूपाक्ष द्वितीय (1465-1485 ई.) :–

- संगम वंश के अन्तिम शासक एवं मल्लिकार्जुन के उत्तराधिकारी विरुपाक्ष के शासन काल में विजयनगर से गोवा, कोंकण एवं उत्तरी कर्नाटक के कुछ भाग अलग हो गये। ऐसी स्थिति में जबकि विजयनगर राज्य टूटने की स्थिति में आ गया था, चन्द्रगिरि में गवर्नर पद पर नियुक्त सालुव नरसिंह ने विजयनगर राज्य की रक्षा की।
- पुर्तगाली यात्री नूनिज के अनुसार ''इस समय विजयनगर में चारों ओर अराजकता एवं अशान्ति का माहौल था।'' इन्हीं परिस्थितियों का फायदा उठाकर सालुव नरसिंह के सेनानायक नरसा नायक ने राजमहल पर कब्जा कर सालुव नरसिंह को राजगद्दी पर बैठने के लिए निमंत्रण दिया। नरसिंह सालुव ने विरुपाक्ष की हत्या कर दी और 1485 ई. में सिंहासन पर अधिकार कर लिया। इस घटना को विजयनगर साम्राज्य के इतिहास में ''प्रथम बलापहार'' कहा गया है।

सालुव राजवंश (1485-1505 ई.)

➢ सालुव नरसिंह (1485-1491 ई.) :–

- सालुव नरसिंह ने विजयनगर में दूसरे राजवंश सालुव वंश की स्थापना की।
- अपने शासन काल में सालुव ने राज्य में व्याप्त आन्तरिक विद्रोहों को समाप्त करने का प्रयत्न किया। परन्तु उड़ीसा के गजपति शासक पुरुषोत्तम ने उसे पराजित कर बन्दी बना लिया तथा साथ ही उदयगिरि के किले पर कब्जा कर लिया।
- कालान्तर में बन्दी जीवन से मुक्त होने के बाद सालुव ने कर्नाटक के तुलु प्रदेश को जीता, इसने अरब से होने वाले घोड़े के व्यापार को पुनः प्रारम्भ किया। 1491 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।
- सालुव की मृत्यु के बाद अल्प काल के लिए उसके बड़े पुत्र तिम्मा ने नरसा नायक के संरक्षण में शासन किया। पुनः तिम्मा के बाद इम्माडि ने भी नरसा नायक के संरक्षण में शासन भार ग्रहण किया।

➢ इम्मादि नरसिंह (1491-1505 ई.) :–

- चूंकि यह अल्पायु था, इसलिए इसके संरक्षक नरसा नायक ने उचित मौके पर सम्पूर्ण सत्ता पर अधिकार कर लिया और स्वयं शासक बन गया। इम्माडि नरसिंह को नरसा ने पेनुकोंडा के किले में कैद कर दिया।
- **नरसा नायक** : अपने 12-13 वर्ष के शासन काल में इसने रायचूर दोआब के अनेक किलों पर अधिकार कर लिया। इसके अतिरिक्त नरसा नायक बीजापुर, बीदर, मदुरा, श्रीरंगपट्टम के शासकों के विरुद्ध किये गये अभियान में सफल रहा। इसने बीजापुर के शासक युसूफ आदिल खान एवं उड़ीसा के शासक प्रतापरुद्र देव (गजपति) को भी परास्त किया तथा चोल, पाण्ड्य एवं चेर शासकों को भी विजयनगर की अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश किया।
- 1505 ई. में इम्मादि नरसिंह की हत्या नरसा नायक के पुत्र वीर नरसिंह ने की, इसके साथ ही सालुव वंश का अन्त हो गया।

तुलुव राजवंश (1505-1570 ई.)

➢ वीर नरसिंह (1505-1509 ई.) :–

- वीर नरसिंह द्वारा स्थापित तुलुव वंश को इतिहास में ''द्वितीय बलापहार'' के नाम से जाना जाता है क्योंकि इसकी स्थापना भी शक्ति के बल पर की गई थी। उसके इस कार्य से राज्य में असंतोष की भावना फैल गई और जनता ने विद्रोह कर दिया जिसे दबाने के क्रम में 1509 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।
- यद्यपि इसका शासन काल अल्प रहा परन्तु फिर भी इसने सेना को सुसंगठित किया, अपने नागरिकों को युद्धप्रिय बनाया, पुर्तगाली गवर्नर अल्मीडा से उसके द्वारा लाये गये सभी घोड़ों को खरीदने के लिए एक समझौता किया, विवाह कर को हटाकर एक उदार नीति को आरंभ किया। नूनिज द्वारा वीर नरसिंह का वर्णन एक 'धार्मिक राजा' के रूप में किया गया है, जो पवित्र स्थानों पर दान किया करता था।

➢ कृष्णदेव राय (1509-1529 ई.) :–

- कृष्णदेव राय 8 अगस्त, 1509 ई. को सिंहासनारूढ़ हुआ, वह भारत के महान शासकों में एक तथा विजयनगर साम्राज्य का महानतम शासक था। वह नरसा नायक का पुत्र तथा वीर नरसिंह का अनुज था। जब वह शासक बना तो राज्य में अव्यवस्था तथा अशांति थी, अतः इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि रही कि इसने न केवल इस अव्यवस्था को समाप्त किया बल्कि विजयनगर साम्राज्य को ऐश्वर्य एवं शक्ति के दृष्टिकोण से अपने चरमोत्कर्ष तक पहुँचा दिया।
- **सैन्य अभियान** :
  - ✓ सर्वप्रथम कृष्णदेव राय ने 1510 ई. में बीदर के शासक महमूदशाह को अदोनी के समीप पराजित किया।
  - ✓ 1513-1518 ई. के बीच कृष्णदेव राय ने उड़ीसा के गजपति शासक प्रतापरूद्र देव को चार बार पराजित किया। पराजय से निराश प्रतापरुद्र देव ने कृष्णदेव राय से संधि की प्रार्थना कर उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया।
  - ✓ 1512 ई. में कृष्णदेव राय ने बीजापुर के शासक यूसुफ आदिल शाह को परास्त कर रायचूर दोआब पर अधिकार किया।
  - ✓ कृष्णदेव राय ने बीदर और गुलबर्ग पर आक्रमण करके बहमनी सुल्तान महमूदशाह को कारागार से मुक्त कराकर बीदर की राजगद्दी पर आसीन किया, जिसकी स्मृति में उसने ''यवनराज स्थापनाचार्य'' की उपाधि धारण की।
  - ✓ कृष्णदेव राय ने गोलकुण्डा के सुल्तान कुली कुतुबशाह को सालुव तिम्म के द्वारा परास्त करवाया।

- ✓ कृष्णदेव राय का अन्तिम सैनिक अभियान 1520 ई. में बीजापुर के सुल्तान इस्माइल आदिल के विरुद्ध था इसने आदिल को परास्त कर गुलबर्गा के प्रसिद्ध किले को ध्वस्त कर दिया। 1520 ई. तक कृष्णदेव राय ने अपने समस्त शत्रुओं को परास्त कर अपने पराक्रम का परिचय दिया।
- ✓ कृष्णदेव राय ने पुर्तगालियों के साथ अच्छे संबंध स्थापित किये क्योंकि ये पुर्तगाली व्यापारी घोड़ों की आपूर्ति करते थे। गोवा के पुर्तगाली अधिकारी अल्बुकर्क ने 1510 ई. में एक व्यापारिक शिष्टमंडल विजयनगर भेजा तथा भटकल में एक कारखाने की स्थापना की अनुमति मांगी।

- कृष्णदेव राय के शासनकाल में पुर्तगाली यात्री ''बारबोसा'' व ''डोमिंगो पायस'' ने विजयनगर की यात्रा की। डोमिंगो पायस ने कृष्णदेव राय को एक महान और न्यायप्रिय शासक बताया है। बारबोसा ने भी समकालीन सामाजिक एवं आर्थिक जीवन का बहुत सुन्दर वर्णन किया है।
- इसने बंजर व जंगली भूमि को कृषि योग्य बनाने का प्रयत्न किया तथा विवाह कर जैसे अलोकप्रिय कर को समाप्त किया।
- कृष्णदेव राय महान शासक के साथ–साथ निर्माता एवं विद्वान भी था। इसने हजारा मंदिर, विट्ठल स्वामी मंदिर का निर्माण करवाया तथा विजयनगर के निकट नागलापुर नामक नगर की स्थापना की।
- कृष्णदेव राय ने संस्कृत में एक नाटक ''जाम्बवती कल्याण'' तथा तेलुगु में ''आमुक्तमाल्यद या विस्वुवितीय'' की रचना की। आमुक्तमाल्यद की तुलना कौटिल्य के अर्थशास्त्र से की जाती है, यह मूलतः राज्यव्यवस्था पर लिखित एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है।
- कृष्णदेव राय का शासनकाल ''तेलुगु साहित्य का क्लासिकी युग'' माना जाता है। यह एक महान प्रशासक होने के साथ–साथ एक महान विद्वान, विद्या प्रेमी और विद्वानों का उदार संरक्षक भी था, जिसके कारण यह ''अभिनव भोज'', ''आन्ध्र पितामह'' या ''आंध्र भोज'' के रूप में प्रसिद्ध था। कुमार व्यास का ''कन्नड़–भारत'' कृष्णदेव राय को समर्पित है।
- इसके दरबार को तेलुगु के आठ महान विद्वान एवं कवि सुशोभित करते थे जिन्हें ''अष्ट दिग्गज'' कहा जाता था :–
  - ✓ तेलुगु कविता के पितामह अल्लसानि पेद्दन की मुख्य कृति है– 'स्वारोचिश सम्भव' या मनुचरित तथा 'हरिकथा सार'।
  - ✓ दूसरे महान कवि नन्दी तिम्मन ने 'पारिजातहरण' की रचना की।
  - ✓ तीसरे कवि भट्टुमूर्ति ने अलंकार शास्त्र से सम्बन्धित पुस्तक 'नरसभूपालियम' की रचना की।
  - ✓ चौथे कवि धूर्जटि ने 'कालहस्ति–महात्म्य' की रचना।
  - ✓ पांचवें कवि मादय्यगरि मल्लन ने 'राजशेखरचरित' की रचना की।
  - ✓ छठें कवि अच्चलराजु रामचन्द्र ने 'सकलकथा सारसंग्रह' एवं 'रामाभ्युदयम्' की रचना की।
  - ✓ सातवें कवि पिंगलीसूरन्न ने 'राघव–पाण्डवीय' की रचना की।
  - ✓ आठवें कवि तेनालि रामकृष्ण ने 'पाण्डुरंग महात्म्य' की रचना की।
- कृष्णदेव राय की 1529 ई. में मृत्यु हो गई। बाबर ने अपनी आत्मकथा 'तुजुक–ए– बाबरी' में कृष्णदेव राय को भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक बताया है।

➢ अच्युतदेव राय (1529-1542 ई.) :–

- कृष्णदेव राय ने अपने चचेरे भाई अच्युतदेव राय को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत किया, जो कृष्णदेव राय के जामाता रामराय को पसंद नहीं था। उसने अपने साले सदाशिव राय का दावा प्रस्तुत किया जो कि नाबालिग था अतः अच्युत देवराय ने रामराय को संयुक्त रूप से शासक बनाया।
- अच्युत देवराय के शासनकाल में पुर्तगाली यात्री नूनिज ने विजयनगर साम्राज्य की यात्रा की।
- अच्युत ने नायकों पर नियंत्रण रखने के लिये महामंडलेश्वर नामक नए अधिकारी की नियुक्ति की।
- अभिलेखीय एवं साहित्यिक प्रमाण बतलाते हैं कि अच्चुतराय 'एकदम वैसा भीरू' नहीं था, जैसा कि नूनिज ने उसका वर्णन किया है।
- इसने मदुरा के राजप्रतिनिधि को दण्ड दिया तथा तिसवांकुर के राजा को (जिसने मदुरा के राजप्रतिनिधि को शरण दी थी) अधीन कर लिया। इसने अपने शासन काल में बीजापुर के शासक इस्माइल आदिल खान से रायचूर एवं मुद्गल के किले को छीन लिया। इसने गजपति शासक के आक्रमण को असफल किया और साथ ही 1530 ई. में गोलकुण्डा के सुल्तान को पराजित किया।
- 1542 ई. में इसकी मृत्यु के बाद अच्युत के साले सलकराज तिरुमल ने अच्युत के अल्पायु पुत्र वेंकट-I को सिंहासन पर बैठाया, उसका शासन काल मात्र 6 महीने तक रहा। इसके बाद विजयनगर की सत्ता अच्युत के भतीजे सदाशिव के हाथों में आ गई।

➢ सदाशिव राय (1542-1570 ई.) :–

- अच्युतदेवराय की मृत्यु के उपरांत सदाशिव शासक बना जो नाममात्र का शासक था, वास्तविक सत्ता रामराय के हाथों में थी।
- इसके समय में रामराय ने बड़ी संख्या में मुस्लिमों को अपनी सेना में सम्मिलित किया।
- रामराय ने दक्षिण भारत में हस्तक्षेप की नीति अपनाई तथा दक्षिण के छोटे–छोटे राज्यों के आंतरिक एवं बाह्य मामलों में हस्तक्षेप किया। 1543 ई. में रामराय ने बीजापुर के विरुद्ध गोलकुण्डा एवं अहमदनगर से संधि की। कालान्तर में उसने अहमदनगर के विरुद्ध बीजापुर तथा गोलकुण्डा को सहयोग दिया, उसकी यह नीति असफल रही।
- परिणामस्वरूप दक्षिण के राज्यों ने एक गठबंधन तैयार किया व 1565 ई. के तालीकोटा के युद्ध में विजयनगर की सेना को जिसका नेतृत्व रामराय कर रहा था, पराजित कर दिया।

राक्षसी–तंगड़ी अथवा तालीकोटा का युद्ध

* विजयनगर और दक्षिण के चार संयुक्त सैनिक संघों के बीच जनवरी 1565 में तालीकोटा का युद्ध हुआ। विजयनगर विरोधी महासंघ में अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा और बीदर शामिल थे। गोलकुण्डा और बरार के मध्य पारस्परिक शत्रुता के कारण बरार इसमें शामिल नहीं था।
* इस युद्ध के समय विजयनगर का शासक सदाशिव राय था जबकि युद्ध का नेतृत्व उसके मंत्री रामराय के हाथों था। इस युद्ध का प्रमुख कारण दक्षिण में रामराय की बढ़ती शक्ति, उसका राजनीतिक हस्तक्षेप था, जिसके कारण विजयनगर के विरूद्ध एक सैनिक महागठबंधन का निर्माण हुआ।
* इस महासंघ के नेता अली आदिलशाह ने रामराय से रायचूर एवं मुद्‌गल के किलों को वापस मांगा। रामराय द्वारा मांग ठुकराये जाने पर दक्षिण के सुल्तानों की संयुक्त सेना राक्षसी तंगड़ी की ओर बढ़ी, जहां पर 25 जनवरी, 1565 को रामराय एवं संयुक्त मोर्चे की सेना में भयंकर युद्ध प्रारम्भ हुआ।
* प्रारम्भिक क्षणों में संयुक्त मोर्चा विफल होता हुआ नजर आया, परन्तु अन्तिम समय में तोपों के प्रयोग द्वारा मुस्लिमों की संयुक्त सेना ने विजयनगर सेना पर कहर ढा दिया जिसके परिणामस्वरूप युद्ध क्षेत्र में ही सत्तर वर्षीय रामराय को घेर कर मार दिया गया। इस युद्ध में रामराय की हत्या हुसैन शाह ने किया।
* विजयनगर शहर को निर्मतापूर्वक लूटकर आग के हवाले कर दिया गया। इस युद्ध की गणना भारतीय इतिहास के विनाशकारी युद्धों में की जाती है।
* इस युद्ध को बन्नीहट्टी के युद्ध के नाम से भी जाना जाता है। फरिश्ता के अनुसार यह युद्ध 'तालीकोटा' में लड़ा गया पर युद्ध का वास्तविक क्षेत्र राक्षसी एवं तगड़ी गांवों के बीच का क्षेत्र था।
* युद्ध के परिणामों के प्रतिकूल रहने पर भी विजयनगर साम्राज्य लगभग सौ वर्ष तक जीवित रहा। तिरुमल के सहयोग से सदाशिव ने पेनुकोंडा को राजधानी बनाकर शासन करना प्रारम्भ किया। यहीं पर विजयनगर के चौथे वंश– अरविडु की स्थापना की गई।

अरविडु राजवंश (1570-1652 ई.)

➢ तालीकोटा के युद्ध के बाद रामराय के भाई तिरुमल 1570 ई. में तुलुव वंश के अंतिम शासक सदाशिव को हटाकर स्वयं शासक बन बैठा और नवीन अरवीडु वंश की स्थापना की। तिरुमल ने पेणुगोंडा को विजयनगर के स्थान पर अपनी राजधानी बनाया।

➢ तिरुमल का उत्तराधिकारी रंग द्वितीय हुआ रंग द्वितीय के बाद वेंकट द्वितीय शासक हुआ। 1586 ई. में वेंकट द्वितीय ने चंद्रगिरि को अपनी राजधानी बनाया, इसे विजयनगर का अंतिम महान शासक माना जाता है।

➢ वेंकट द्वितीय की रुचि चित्रकला में थी, इसे यूरोपीय चित्र काफी पसंद थे। इसने दो जेसुइट चित्रकार अपनी सेवा में रखे। वेंकट द्वितीय ने स्पेन के फिलिप तृतीय से सीधा पत्र व्यवहार किया और वहां से ईसाई पादरियों को आमंत्रित किया। इसके शासन काल में ही वाडियार ने 1612 ई. में मैसूर राज्य की स्थापना की।

➢ अरविडु वंश सत्रहवीं शताब्दी के मध्य तक चलता रहा परंतु उसके नायकों ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी, मैसूर, बेदनूर, तंजीर आदि स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हो गई। श्रीरंग तृतीय को विजयनगर का अंतिम शासक माना जाता है। उसके बाद विजयनगर साम्राज्य की समाप्ति हो गई।

विजयनगर प्रशासन

➢ विजयनगर साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था की जानकारी समकालीन रचनाओं, अभिलेखों एवं विदेशी यात्रियों के वृत्तांतों से प्राप्त होती है। प्राचीन भारत की भाँति इस काल में भी राज्य की सप्तांग विचारधारा पर बल दिया गया था। कृष्णदेव की रचना आमुक्तमाल्यद में राजा के कर्तव्यों और आदर्शों का उल्लेख किया गया है। विजयनगर साम्राज्य के राजनीतिक स्वरूप के बारे में दो प्रकार के मत मिलते हैं। ए.के. शास्त्री के अनुसार विजयनगर साम्राज्य एक केन्द्रीकृत राज्य था। इसके विपरीत बर्टनस्टेन विजयनगर को खंडित राज्य का दर्जा देते हैं।

➢ केंद्रीय प्रशासन :–

- विजयनगर प्रशासन निरंकुश एवं कल्याणकारी राजतंत्र की अवधारणा पर आधारित था। राजा ही प्रशासनिक, सैनिक एवं केंद्रीय प्रशासन का प्रमुख होता था। राज्य एवं शासन के मूल में राजा (राय) होता था।
- इस काल में प्राचीन राज्य की 'सप्तांग विचारधारा' का अनुसरण किया जाता था। राजा के चुनाव में राज्य के मंत्री एवं नायक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते थे। विजयनगर के राजाओं ने अपने व्यक्तिगत धर्म के बाद भी धार्मिक सहिष्णुता की नीति का अनुसरण किया। यद्यपि राज्य निरंकुश होता था पर बर्बर नहीं। राजा को राज्याभिषेक के समय प्रजापालन एवं निष्ठा की शपथ लेनी पड़ती थी। अच्युत देवराय ने अपना राज्याभिषेक तिरूपति मन्दिर में सम्पन्न कराया था।
- विजयनगर में संयुक्त शासन की परम्परा भी विद्यमान थी, जैसे– हरिहर एवं बुक्का तथा विजय राय एवं देवराय। युवराज के अल्पायु होने की स्थिति में राजा अपने जीवन काल में ही स्वयं किसी मंत्री को उसका संरक्षक नियुक्त करता था। इस काल के कुछ महत्त्वपूर्ण संरक्षक थे– वीर नरसिंह, नरसा नायक एवं रामराय आदि। कालान्तर में यही संरक्षक व्यवस्था ही विजयनगर के पतन में बहुत कुछ जिम्मेदार रही।
- राजा के बाद 'युवराज' का पद होता था। युवराज के राज्याभिषेक को ''युवराज पट्टाभिषेकम'' कहते थे।
- प्रशासनिक कार्यों में सहयोग करने के लिए एक 'मंत्रिपरिषद्' होती थी, जिसमें प्रधानमंत्री, मंत्री, उपमंत्री, विभागों के अध्यक्ष तथा राजा के कुछ नजदीक के सम्बन्धी होते थे। मंत्रियों के चयन में आनुवंशिकता की परम्परा का पालन होता था।
- मंत्रिपरिषद् मुख्य 'अधिकारी को 'प्रधानी' या 'महाप्रधानी' कहा जाता था। इसकी स्थिति के प्रधानमंत्री जैसी थी। इसकी तुलना मराठा कालीन पेशवा से की जा सकती है। मंत्रिपरिषद में कुल 20 सदस्य होते थे। मंत्रिपरिषद् के अध्यक्ष को 'सभानायक' कहा जाता था। राजा इस मंत्रिपरिषद् की राय लेता था, पर वह उसे मानने के लिए बाध्य नहीं था।
- केन्द्र में दण्डनायक नामक उच्च अधिकारी होता था। दंडनायक का अर्थ 'प्रशासन का प्रमुख' और 'सेनाओं का नायक' होता था। कहीं–कहीं मंत्रियों को भी दंडनायक की उपाधि प्रदान किये जाने का उल्लेख मिलता है। दण्डनायक को न्यायाधीश, सेनापति, गवर्नर या प्रशासकीय अधिकारी आदि का कार्यभार सौंपा जा सकता था।
- कुछ अन्य अधिकारियों को 'कार्यकर्ता' कहा जाता था। विजयनगर का प्रशासन एक विशाल सचिवालय द्वारा संचालित होता था, जिसमें कई विभाग एवं संबंधित विभागों के कई अधिकारी होते थे, जैसे– मानेय प्रधान, रायसम, कर्णिकम् आदि।
- **सैन्य व्यवस्था** : विजयनगर की सेना में पैदल, अश्वारोही, हाथी तथा ऊंट शामिल थे। सैन्य विभाग को 'कन्दाचार' कहा जाता था। इस विभाग का उच्च अधिकारी 'दण्डनायक' या 'सेनापति' होता था।
- **न्याय व्यवस्था** : राज्य का प्रधान न्यायाधीश राजा होता था। भयंकर अपराध के लिए शरीर के अंग विच्छेदन का दंड दिया जाता था। प्रान्तों में प्रान्तपति तथा गांवों में आयंगार न्याय करता था। न्याय व्यवस्था हिन्दू धर्म पर आधारित थी। पुलिस विभाग का खर्च वेश्याओं पर लगाये गये कर से चलता था।

प्रमुख पदाधिकारी तथा उनके कार्य

क्र.	अधिकारी	कार्य
1.	नायक	सैनिक भू–सामंत
2.	महानायक	ग्राम सभाओं की कार्यवाहियों का निरीक्षण करने वाले अधिकारी
3.	दंडनायक	सैनिक विभाग का प्रमुख तथा सेनापति
4.	महाप्रधानी	मंत्रिपरिषद् का प्रमुख
5.	रायसन	सचिव
6.	कर्णिकम्	लेखाधिकारी
7.	अमरनायक	सामंतो का वह वर्ग जो राज्य को सैन्य मदद देने के लिये बाध्य था
8.	आयंगार	वंशानुगत ग्रामीण अधिकारी
9.	पोलिगार	सेनापति या नायक
10.	स्थानिक	मंदिरों की व्यवस्था करने वाले अधिकारी
11.	मुद्राकत्ता	शाही मुद्रा रखने वाला अधिकारी
12.	सेनतेओवा	ग्राम का लेखाधिकारी
13.	तलर	ग्राम का रखवाला (चौकीदार)
14.	परूपगार	स्थान विशेष में राजा या गर्वनर का प्रतिनिधि
15.	गौड	ग्राम प्रशासक
16.	अंत्रिमार	ग्राम प्रशासन का एक अधिकारी

➢ प्रांतीय प्रशासन :–

प्रशासनिक व्यवस्था	
प्रांत	राज्य या मंडलम
ज़िला	कोटटम या वलनाडु
तहसील या परगना	नाडु
पचास गाँव	मेलाग्राम
कुछ गाँवों के समूह	स्थल या सीमा
प्रशासन की छोटी ईकाई	ग्राम

- प्रांतीय प्रशासन विजयनगर साम्राज्य का विभाजन प्रांत, राज्य या मंडल में किया गया था। कृष्णदेव राय के शासनकाल में प्रान्तों की संख्या सर्वाधिक 6 थी।
- प्रान्तों में गवर्नर के रूप में राज परिवार के सदस्य या अनुभवी दण्डनायकों की नियुक्ति की जाती थी। इन्हें सिक्कों को प्रसारित करने, नये कर लगाने, पुराने कर माफ करने एवं भूमिदान करने आदि की स्वतन्त्रता प्राप्त थी। प्रांत के गवर्नर को भू–राजस्व का एक निश्चित हिस्सा केन्द्र सरकार को देना होता था।
- प्रांत को 'मंडल' एवं मंडल को 'कोट्टम' या 'जिले' में विभाजित किया गया था। कोट्टम को 'वलनाडु' भी कहा जाता था। कोट्टम का विभाजन 'नाडुओं' में हुआ था जिसकी स्थिति आज के परगना एवं ताल्लुका जैसी थी। नाडुओं को 'मेलाग्राम' में बांटा गया था। एक मेलाग्राम के अन्तर्गत लगभग 50 गांव होते थे। 'उर' या 'ग्राम' प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी। इस समय गांवों के समूह को 'स्थल' एवं 'सीमा' भी कहा जाता था।
- संगम युग में गवर्नरों के रूप में शासन करने वाले राजकुमारों को ''उरैयर'' की उपाधि मिली हुई थी। चोल युग और विजयनगर युग के राजतंत्र में सबसे बड़ा अन्तर नायंकार व्यवस्था थी।
- **नायंकार व्यवस्था :**
  - ✓ इस व्यवस्था की उत्पत्ति के बारे में इतिहासकारों में मतभेद है। कुछ का मानना है कि विजयनगर की सेना के सेनानायकों को 'नायक' कहा जाता था, कुछ का मानना है कि नायक 'भू–सामन्त' होते थे, जिन्हें वेतन के बदले एवं स्थानीय सेना के खर्च को चलाने के लिए विशेष भू–खण्ड, जिसे 'अमरम' कहा जाता था, दिया जाता था।
  - ✓ चूंकि ये अमरम भूमि का प्रयोग करते थे, इसलिए इन्हें 'अमरनायक' भी कहा जाता था। अमरम भूमि की आय का एक हिस्सा केन्द्रीय सरकार के कोष के लिए देना होता था। नायक को अमरम भूमि में शांति, सुरक्षा एवं अपराधों को रोकने के दायित्व का भी निर्वाह करना होता था। इसके अतिरिक्त उसे जंगलों को साफ करवाना एवं कृषि योग्य भूमि का विस्तार भी करना होता था।
  - ✓ नायंकारों के आंतरिक मामलों में राजा हस्तक्षेप नहीं कर सकता था। इनका पद आनुवंशिक होता था नायकों का स्थानान्तरण नहीं होता था। राजधानी में नायकों के दो सम्पर्क अधिकारी एक नायक की सेना का 'सेनापति' और दूसरा प्रशासनिक अभिकर्ता 'स्थानपति' रहते थे। अच्युतदेवराय ने नायकों की उच्छृंखलता को रोकने के लिए 'महामंडलेश्वर' या विशेष कमिश्नरों की नियुक्ति की थी। नायंकार व्यवस्था में सामंतवादी लक्षण थे, जो विजयनगर के पतन का कारण बनी।
- **आयंगार व्यवस्था :**
  - ✓ प्रशासन को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए प्रत्येक ग्राम को एक स्वतन्त्र इकाई के रूप में संगठित किया गया था। इन संगठित ग्रामीण इकाइयों पर शासन हेतु एक 12 प्रशासकीय अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी, जिनको सामूहिक रूप से 'आयंगार' कहा जाता था।
  - ✓ इनकी नियुक्ति सीधे केंद्र के द्वारा की जाती थी। ये अवैतनिक होते थे। इनकी सेवाओं के बदले सरकार इन्हें पूर्णतः कर मुक्त एवं लगान मुक्त भूमि प्रदान करती थी। इनका पद 'आनुवंशिक' होता था। यह अपने पद को किसी दूसरे व्यक्ति को बेच या गिरवी रख सकता था। ग्राम स्तर की कोई भी सम्पत्ति या भूमि इन अधिकारियों की इजाजत के बगैर न तो बेची जा सकती थी और न ही दान दी जा सकती थी।
  - ✓ उन बारह आयंगार ग्रामीण कर्मचारियों में कर्णिकम गाँव का लेखाकार एवं लिपिक होता था तथा एक तलार ग्राम का प्रधान पुलिसकर्मी होता था। इस व्यवस्था ने ग्रामीण स्वतंत्रता का गला घोंट दिया।

विजयनगर राज्य में आए विदेशी यात्री			
क्र.	यात्री	देश	शासक
1.	इब्नबतूता	मोरक्को	हरिहर प्रथम
2.	निकोलोकोण्टी	इटली	देवराय प्रथम
3.	अब्दुर्रज़्जाक	ईरान	देवराय द्वितीय
4.	डुआर्ट बारबोसा	पुर्तगाली	कृष्णदेव राय
5.	डोमिंगो पायस	पुर्तगाली	कृष्णदेव राय
6.	फर्नाओ दी नूनिज	पुर्तगाली	अच्युतदेव राय
7.	सीजर फ्रेडरिक	पुर्तगाली	तालीकोटा युद्ध के तुरंत बाद

- **स्थानीय शासन :** विजयनगर काल में चोलकालीन सभा को कहीं–कहीं महासभा, उर एवं महाजन कहा जाता था। 'सभा' में विचार–विमर्श के लिए गांव या क्षेत्र विशेष के लोग भाग लेते थे। 'नाडु' गांव की बड़ी राजनीतिक इकाई के रूप में प्रचलित थी । नाडु की सभा को नाडु एवं सदस्यों को 'नात्तवार' कहा जाता था। 'बेगरा' गांव में बेगार, मजदूरी आदि की देखभाल करता था। ब्रह्मदेव ग्रामों (ब्राह्मणों को भू–अनुदान के रूप में प्राप्त ग्राम) की सभाओं को 'चतुर्वेदीमंगलम्' कहा गया है। गैर ब्रह्मदेव ग्राम की सभा उर कहलाती थी।

विजयनगर : सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति

➢ सामाजिक स्थिति :–

- विजयनगर साम्राज्य की समाजिक स्थिति सैद्धांतिक रूप से शास्त्रीय परंपराओ पर आधारित थी। यह भारतीय इतिहास का अंतिम साम्राज्य था जो वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधारित था, जो इस प्रकार थे – विप्रलु, राजलु, मोतिकिरतलु और नलवजटिवए, जिनका संबंध क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र से था।
- समाज में ब्राह्मणों को चारों वर्णों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। उन्हें ही शासन के उच्च पदों पर नियुक्त किया जाता था तथा उन्हें मृत्युदंड से मुक्त रखा गया था।
- समाज के दूसरे वर्ण क्षत्रियों का यहाँ अभाव था, मध्य वर्गो में शेट्टी या चेट्टी नामक एक बड़ा समूह था। अधिकांश व्यापार इन्हीं के द्वारा किया जाता था। व्यापार के अतिरिक्त ये लोग लिपिक एवं लेखाकार्यों में भी निपुण थे।
- चेट्टियों की तरह व्यापार में निपुण दस्तकार वर्ग के लोगों को 'वीर पांचाल' कहा जाता था। उत्तर भारत से दक्षिण भारत में आकर बसे लोगों को 'बडवा' कहा गया। इन उत्तर भारतीय बडवा ने दक्षिणवासियों के व्यपार को अपना लिया जिसके कारण दोनों के बीच एक संघर्ष की स्थिती रहती थी।
- इसी प्रकार का संघर्ष वेलंगै (कृषक समुदाय) तथा इंडगै (औद्योगिक समुदाय) के बीच भी था। इसके अतिरिक्त समाज में कैकोल्लार (बुनकर), कंबलत्तर (गडेरिया), वीर पांचाल(दस्तकार वर्ग), सुनार, बढ़ई, मूर्तिकार, लोहार, जुलाहे, आदि शामिल थे।
- इस दौरान दास प्रथा का प्रचलन था। महिला एवं पुरुष दोनों वर्ग के लोग दास हुआ करते थे। मनुष्यों के खरीदे एवं बेचे जाने को 'बेस–वाग' कहा जाता था। लिये गये ऋण को न दे पाने एवं दिवालिया होने की स्थिति में ऋण लेने वालों को दास बनना पड़ता था।
- **महिलाओं की स्थिति :**
  - ✓ समाज में तुलनात्मक रूप से स्त्रियों की स्थिति संतोषजनक थी। उन्हें लिपिक, अंगरक्षिका, भविष्यवक्ता, ज्योतिषी, संगीतकार, मल्लयुद्ध में भाग लेना जैसे कार्यों में संलग्न किया जाता था। संगीत तथा नृत्य की भी उन्हें शिक्षा दी जाती थी।
  - ✓ किन्तु समाज में बाल विवाह, दहेज प्रथा, विधवा विवाह एवं बहुपत्नी प्रथा का प्रचलन था। अंतर्विवाह पर रोक नहीं थी। बारबोसा के अनुसार, लिंगायात चेट्टियों एवं ब्राह्मणों में सतीप्रथा प्रचलित थी।
  - ✓ मंदिरों में देवपूजा के लिए रहने वाली स्त्रियों को देवदासी कहा जाता था, जो आजीवन कुंआरी रहती थी।
  - ✓ गणिकाओं को भी समाज में अच्छी दृष्टि से देखा जाता था। ये पर्याप्त शिक्षित तथा विशेषाधिकार सम्पन्न होती थीं। ये दो तरह की होती थी : 1. मंदिरों से सम्बन्धित और 2. स्वतन्त्र ढंग से जीवन–यापन करने वाली।
  - ✓ कृष्णदेव राय के दरबार में महिला अंगरक्षिकाओं की भी नियुक्ति की जाती थी।
- युद्ध में शौर्य का प्रदर्शन करने के कारण उन व्यक्तियों को सम्मान के रूप में पैर में 'गंडपेद्र' का कड़ा पहनाया जाता था। बाद में यह सम्मान असैनिक सम्मान के रूप में मंत्रियों, विद्वानों, सैनिकों एवं अन्य सम्माननीय व्यक्तियों को दिया जाने लगा।
- विजयनगर नरेश शिक्षा को प्रत्यक्ष प्रोत्साहन नहीं देते थे। मंदिर, मठ एवं अग्रहार मुख्य शिक्षा के केन्द्र थे । अग्रहारों में मुख्य रूप से वेदों की शिक्षा दी जाती थी। तुलुव वंश ने शिक्षा को पर्याप्त प्रोत्साहन दिया।
- मनोरंजन के क्षेत्र में नाटक एवं संगीतमय अभिनय (यक्षगान) का प्रचलन था। बोमघाट (छाया–नाटक) नाटक काफी सराहा जाता था। शतरंज, जुआ व पासे के खेल के प्रचलन में होने का उल्लेख मिलता है। कृष्णदेव राय स्वयं शतरंज के खिलाड़ी थे।

➢ आर्थिक स्थिति :–

- विजयनगर साम्राज्य आर्थिक दृष्टि से एक समृद्धशाली राज्य था। केन्द्रीय राजस्व विभाग को अठनवे (अयवन) कहा जाता था।
- विजयनगर साम्राज्य की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था। बंजर एवं जंगली भूमि का कृषि भूमि के रूप में काफी विस्तार हुआ। सिंचाई के लिये कई नहरों का निर्माण किया गया।
- इस समय आय के प्रमुख स्रोत थे लगान, सम्पत्ति कर, व्यावसायिक कर, उद्योगों पर कर, सिंचाई कर, चारागाह कर, उद्यान कर एवं अनेक प्रकार के अर्थ दण्ड। वियजनगर साम्राज्य द्वारा वसूल किये जाने वाले विविध करों के नाम थे– कदमाई, मगमाई, कनिक्कई, कत्तनम्, कणम्, वरम्, भोगम्, वारिपत्तम्, इराई और कत्तायम्।
- 'शिष्ट' नामक भूमिकर आय का प्रमुख एवं सबसे बड़ा स्रोत था, राज्य उपज का 1/6 भाग कर के रूप में वसूल करता था।
- कृष्णदेव राय के शासन काल में भूमि का एक व्यापक सर्वेक्षण करवाया गया तथा भूमि की उर्वरता के अनुसार उपज का 1/3 या 1/6 भाग कर के रूप में निर्धारित किया गया।

- आय का अन्य स्रोत था : सिंचाई कर, जिसे तमिल प्रदेश में 'दासावन्दा' एवं आन्ध्रप्रदेश व कर्नाटक में 'कद्दूकोडेज' कहा गया।
- ब्राह्मणों के अधिकार वाली भूमि से उपज का 20वां भाग तथा मंदिरों की भूमि से उपज का 30वां भाग कर के रूप में वसूला जाता था। रामराय ने नाइयों को व्यावसायिक कर से मुक्त कर दिया। कृष्णदेव राय ने विवाह कर को समाप्त कर दिया था।
- राज्य का राजस्व वस्तु एवं नकद दोनों ही रूपों में वसूल किया जाता था। विजयनगर काल में मंदिरों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती थी। वे सिंचाई परियोजनाओं के साथ–साथ बैंकिंग गतिविधियों का संचालन भी करते थे। इनके पास सुरक्षित भूमि को 'देवदान' अनुदान कहा जाता था। एक शिलालेख के उल्लेख के आधार पर माना जाता है कि इस समय मंदिरों में लगभग 370 नौकर होते थे।
- कुदि वे कृषक मजदूर होते थे जो भूमि के क्रय–विक्रय के साथ ही हस्तांतरित हो जाते थे, परन्तु इन्हें इच्छापूर्वक कार्य से विलग नहीं किया जा सकता था।

भूमि का विभाजन

भूमि	उपयोग
भंडारवाद ग्राम	राज्य के नियत्रंण वाली भूमि।
ब्रह्मदेय, देवदेय तथा मठापुर भूमि	धार्मिक सेवाओं के बदले मंदिर, मठ एवं ब्राह्मणों को दान में दी गई भूमि।
अमरम्	सैन्य एवं असैन्य अधिकारियों को उनकी सेवा के बदले दी गई भूमि।
उंबालि	विशेष सेवाओं के बदले दी गई लगानमुक्त भूमि।
रत्त कोडगे	युद्ध में शौर्य प्रदर्शन करने या मृत होने की स्थिति में उनके परिवार को दी जाने वाली लगाल मुक्त भूमि।
कुट्टगि	ब्राह्मण, मंदिर एवं बड़े भू–स्वामी खेती के लिए किसानों को पट्टे पर भूमि देते थे।

- **व्यापार :**
  - ✓ विजयनगर साम्राज्य में व्यापार वाणिज्य काफी उन्नत अवस्था में था। व्यापार देशी एवं विदेशी दोनों प्रकार के होते थे तथा स्थल एवं समुद्री मार्गों से होता था। समुद्री व्यापार अधिकांशतः विदेशियों के हाथों में ही था। अब्दुर्रज्जाक ने लिखा है कि विजयनगर में लगभग 300 बंदरगाह थे। व्यापार का पक्ष विजयनगर की ओर था।
  - ✓ विजयनगर काल में मलाया, बर्मा, चीन, अरब, ईरान, अफ्रीका, अबीसीनिया एवं पुर्तगाल से व्यापार होता था। मुख्य निर्यातक वस्तुएं थीं– कपड़ा, चावल, गन्ना, इस्पात, मसाले, इत्र, शोरा, चीनी आदि। आयात की जाने वाली वस्तुएं थीं– अच्छी नस्ल के घोड़े, हाथी दांत, मोती बहुमूल्य पत्थर, नारियल, पॉम, नमक आदि। मोती फारस की खाड़ी से तथा बहुमूल्य पत्थर पेगू से मंगाये जाते थे। नूनिज ने हीरों के ऐसे बन्दरगाह की चर्चा की है जहां विश्व भर में सर्वाधिक हीरों की खानें पायी जाती थीं। व्यापार मुख्यतः चेट्टियों के हाथों में केन्द्रित था। दस्तकार वर्ग के व्यापारियों को ''वीर पांचाल'' कहा जाता था।
- **मुद्रा व्यवस्था :**
  - ✓ विजयनगर साम्राज्य की मुद्रा प्रणाली भारत की सर्वाधिक प्रशंसनीय मुद्रा प्रणालियों में से एक थीं। यहाँ स्वर्ण धातु के सिक्के काफी प्रचलित थे।
  - ✓ विजयनगर का सर्वाधिक प्रसिद्ध स्वर्ण का सिक्का ''वराह'' था जिसे विदेशी यात्रियों ने हूण, परदौस या पगौड़ा आदि नामों से उल्लेख किया है। यह 52 ग्रेन का होता था।
  - ✓ सोने के छोटे सिक्के को ''प्रताप तथा फणम्'' कहा जाता था जबकि चांदी के छोटे सिक्के ''तार'' कहलाते थे।
  - ✓ विजयनगर साम्राज्य के सिक्कों से वहाँ के नरेशों के धार्मिक विश्वासों का पता चलता है, जैसे– हरिहर के स्वर्ण सिक्कों पर हनुमान एवं गरुड़ की आकृति, तुलुव वंश के सिक्कों पर गरुड़, उमा, महेश्वर, वेंकटेश और बालकृष्ण की आकृतियां एवं सदाशिव राय के सिक्कों पर लक्ष्मीनारायण की आकृति आदि। अरविडु वंश के शासक वैष्णव धर्मानुयायी थे, अतः उनके सिक्कों पर वेंकटेश, शंख एवं चक्र अंकित हैं।

➢ विजयनगर की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ :–

- विजयनगर के शासकों ने स्थापत्यकला, नाट्यकला, प्रतिमाकला एवं भाषा और साहित्य में विशेष रुचि दिखाई। विजयनगर साम्राज्य में दक्षिण भारतीय भाषाओं तमिल, तेलुगु, संस्कृत तथा कन्नड़ का विकास हुआ। विजयनगर के शासकों ने साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। विजय नगर के प्रारंभिक शासकों के अधीन संस्कृत साहित्य की विशेष प्रगति हुई। शासकों ने स्थापत्यकला के विकास में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। दक्षिण भारत में मंदिर निर्माण शैली को चरमोत्कर्ष विजयनगर के शासकों के काल में ही प्राप्त हुआ। द्रविड़ शैली के आधार पर विजयनगर सम्राज्य का स्थापत्य विकसित हुआ। कृष्णदेव राय ने ''हजारा राम एवं विट्ठलस्वामी मंदिर'' का निर्माण कराया।
- विजयनगर काल में चित्रकला की स्वतंत्र शैली विकसित हुई। विजयनगर की चित्रकला ''लिपाक्षी कला'' के नाम से जानी जाती है। इस चित्रकला के विषय रामायण एवं महाभारत से लिये गए हैं। विजनगर में संगीत एवं नृत्य को मिलाकर शैली विकसित हुई जो ''यक्षणी शैली'' के नाम से जानी जाती है।